• कविताएं...

कलम

कलम तुम खुशी लिखो
जिससे किसी के चेहरे पर
भले एक ही क्षण के लिए
मुस्कान झलक जाए
कलम तुम गीत लिखो
जिसे गाकर कोई व्यथित मन
अपनी तकलीफों को
भूल जाए
कलम तुम जीत लिखो
जिससे कोई अपनी
मनचाही मंजिल
पा जाए
कलम तुम प्रकाश लिखो
जिससे मन के
तिमिर रौशन होकर
छंट जाएं
कलम तुम कभी मत
कुछ ऐसा लिखो जिससे
किसी को चोट पहुंचे
दर्द हो
कलम तुम कभी मत लिखना
किसी की निंदा
कुछ भी ऐसा
जिससे किसी का
अपमान हो
मेरे कलम
तुम मेरे सच्चे साथी हो
चलो मिलकर चलें
उस दिशा में
जहां प्रयास हो
मेहनत हो
सफलता हो
जहां सकारात्मकता हो
ज्ञान हो और ज्ञान का
यथोचित सम्मान हो

■ दीपा मिश्रा

बेहद हूं

तुम एक कंकड़
मेरी गहराई में कहीं
तुम्हारी हलचल
मुझे निकाल देती है
मेरे किनारों की हद से बाहर
तुम अमर बेल
मेरे तन को समेटे
लपेटे अपने आप में
मेरा जीवन तब तक
जब तक तुम मेरे पास
सुनो तुम जैसे भी
अच्छे-बुरे मेरी हद हो
मैं जैसी भी सही-गलत
तुम्हारे लिए बेहद हूँ

■ पूजा कनुप्रिया

• कहानी/–कृष्णा सोबती

दादी-अम्मा

गतांक से आगे...

अम्मा बेटे को गोद में लिये दूध पिला रही हैं बापू घूम-फिरकर पास आ खड़े होते हैं। तेवर चढ़े। तीखे बालों को फीका बनाकर कहते हैं, 'मेरी देखरेख अब सब भूल गई हो। मेरे कपड़े कहाँ डाल दिए?' अम्मा बेटे के सिर को सहलाते-सहलाते मुस्कुराती है। फिर बापू की आँखों में भरपूर देखकर कहती है, 'अपने ही बेटे से प्यार का बँटवारा कर झुँझलाने लगे!'

बापू इस बार झुँझलाते नहीं, झिझकते हैं, फिर एकाएक दूध पीते बेटे को अम्मा से लेकर चूम लेते हैं। मुन्ने के पतले नर्म ओठों पर दूध की बूँद अब भी चमक रही है। बापू अँधेरे में अपनी आँखों पर हाथ फेरते हैं। हाथ गीले हो जाते हैं। उनके बेटे की माँ आज नहीं रही।

तीनों बेटे दबे-पाँवों जाकर दादा को झाँक आए। बहुएँ सास की आज्ञा पा अपने-अपने कमरों में जा लेटीं। बेटियों को सोता जान मेहराँ पति के पास आई तो सिर दबाते-दबाते प्यार से बोली, 'अब हौसला करो'... लेकिन एकाएक किसी की गहरी सिसकी सुन चौंक पड़ी। पति पर झुककर बोली, 'बापू की आवाज लगती है, देखो तो।'

बेटे ने जाकर बाहरवाला द्वार खोला, पीपल से लगी झुकी-सी छाया। बेटे ने कहना चाहा, 'बापू'! पर बैठे गले से आवाज़ निकली नहीं। हवा में पत्ते खड़खड़ाए, टहनियाँ हिलीं और बापू खड़े-खड़े सिसकते रहे।

'बापू!'

इस बार बापू के कानों में बड़े पोते की आवाज आई। सिर ऊँचा किया, तो तीनों बेटों के साथ देहरी पर झुकी मेहराँ दीख पड़ी। आँसुओं के गीले पूर में से धुंध बह गई। मेहराँ अब घर की बहू नहीं, घर की अम्मा लगती है। बड़े बेटे का हाथ पकड़कर बापू के निकट आई। झुककर गहरे स्नेह से बोली, 'बापू, अपने इन बेटों की ओर देखो, यह सब अम्मा का ही तो प्रताप है। महीने-भर के बाद बड़ी बहू की झोली भरेगी, अम्मा का परिवार और फूले-फलेगा।'

बापू ने इस बार सिसकी नहीं भरी। आँसुओं को खुले बह जाने दिया। पेड़ के कड़े तने से हाथ उठाते-उठाते सोचा-दूर तक धरती में बैठी अगणित जड़ें अंदर-ही-अंदर इस बड़े पुराने पीपल को थामे हुए हैं। दादी-अम्मा इसे नित्य पानी दिया करती थी। आज वह भी धरती में समा गई है। उसके तन से ही तो बेटे-पोते का यह परिवार फैला है। पीपल की घनी छाँह की तरह यह और फैलेगा। बहू सच कहती है। यह सब अम्मा का ही प्रताप है। वह मरी नहीं।

वह तो अपनी देह पर के कपड़े बदल गई है, अब वह बहू में जीएगी, फिर बहू की बहू में...।

-समाप्त

• कहानी/–चार्ल्स डिकेंस
(अनुवाद : कृष्णकांत श्रीवास्तव)

एक सितारा सपने में

आसमान में एक चमकीला सितारा था, जो हर रोज सब सितारों से पहले आ जाता, चर्च के पासवाली कब्रों के करीब। यह सितारा खूब बड़ा और सुंदर था। हर रात वे उसे देखते।

खिड़की के पास हाथों में हाथ डाले। जो भी उसे पहले देख लेता, वह चीख पड़ता, 'मैंने सितारा देख लिया...' अकसर वे दोनों एक साथ चिल्लाते, क्योंकि उन्हें अच्छी तरह से मालूम हो गया था कि यह कब और कहाँ निकलता है। जैसे वे इसके दोस्त बन गए थे...

एक बच्चा यों ही घूमते-फिरते जाने कितनी बातें सोचता रहता। उसकी एक छोटी सी बहन भी थी। बहन और दोस्त भी। दोनों भाई-बहन दिनभर अचरज से भरे रहते। उन्हें फूलों की सुंदरता पर आश्चर्य होता। उन्हें आसमान की ऊँचाई और नीलेपन पर आश्चर्य होता। उन्हें चमकते पानी की गहराई पर आश्चर्य होता। उन्हें ईश्वर की अच्छाई और शक्ति पर आश्चर्य होता और उसकी रची इस प्यारी दुनिया पर आश्चर्य होता।

वे अकसर एक-दूसरे से कहते कि अगर दुनिया के सारे बच्चे मर जाएँ तो क्या इन सबको दु:ख होगा? उन्हें यकीन था कि वे जरूर दु:खी होंगे। उन्हें लगता कि कलियाँ फूलों की बेटियाँ हैं और पहाड़ों से झरती छोटी-छोटी धाराएँ पानी के बच्चे...और रातभर आसमान में लुका-छिपी खेलते हुए ये छोटे-छोटे चमकीले कण मानो सितारों के नौनिहाल हैं। उन्हें लगता कि वे अपने संगी-साथियों यानी इनसान के बच्चों के लिए दु:खी होते होंगे।

आसमान में एक चमकीला सितारा था, जो हर रोज सब सितारों से पहले आ जाता, चर्च के पासवाली कब्रों के करीब। यह सितारा खूब बड़ा और सुंदर था। हर रात वे उसे देखते। खिड़की के पास हाथों में हाथ डाले। जो भी उसे पहले देख लेता, वह चीख पड़ता, 'मैंने सितारा देख लिया...' अकसर वे दोनों एक साथ चिल्लाते, क्योंकि उन्हें अच्छी तरह से मालूम हो गया था कि यह कब और कहाँ निकलता है। जैसे वे इसके दोस्त बन गए थे। रात को बिस्तर पर जाने से पहले भी एक बार उसे जरूर देख आते, जैसे उसे गुडनाइट कह रहे हों। जब बिस्तर पर जाने के लिए मुड़ते तो कहते, 'भगवानजी, आप इस सितारे का खयाल रखना।

एक बार उस बच्चे की बहन कहीं से गिर पड़ी। गिरने के कारण वह नन्ही सी जान इतनी ज्यादा कमजोर हो गई कि रात को खिड़की पर खड़ा होना भी उसके लिए मुश्किल हो गया। उसका भाई उदास सा बाहर देखता रहता। जब उसे तारा दिखाई दे जाता, तब वह अपनी बहन के पास आता और कहता, 'मैंने तारा देख लिया।' उस पीले मुरझाए चेहरे पर एक मुसकान खिल जाती और वह कहती, 'भगवानजी, मेरे भइया और उस तारे का हमेशा खयाल रखना।'

जल्द ही वह समय आ गया, जब बच्चा अकेला ही उस तारे को देखने लगा, क्योंकि उसका वह मासूम साथी चेहरा अब उस बिस्तर पर भी नहीं था। हाँ, कब्रों के बीच एक छोटी सी कब्र बन चुकी थी। जब सितारा अपनी किरणें बिखेरता हुआ आसमान में आता तो बच्चे की आँखें आँसुओं से भर जातीं।

अब ये किरणें इतनी चमकीली होने लगी थीं कि आसमान से धरती तक एक चमकते हुए रास्ते जैसी लगतीं। एक दिन जब बच्चा अकेला बिस्तर पर गया, उसने उस सितारे का सपना देखा। उसने एक ट्रेन को फरिश्तों के चमकते रास्ते पर ऊपर की तरफ जाते देखा। देखते-ही-देखते सितारे ने खुलकर बड़ी सी रोशनी का रूप ले लिया। उसने देखा कि वहाँ और भी बहुत से फरिश्ते थे, जो लोगों का स्वागत कर रहे थे।

ये सारे फरिश्ते लोगों को चमकती हुई आँखों से देखते, नेह से चूमते और फिर उस विराट रोशनी की ओर अपने साथ ले जाते। बच्चा इतना खुश था कि खुशी से रो पड़ा। वहाँ कुछ फरिश्ते ऐसे भी थे, जो उनके साथ नहीं गए थे। उनमें से एक को वह अच्छी तरह से जानता था। वही एक नन्हा बीमार चेहरा, जिसे वह बिस्तर पर देखा करता था, अब जैसे चमक से भर उठा था। उसे उन सारे फरिश्तों में सबसे प्यारी अपनी बहन ही लगी। उसकी बहन ने फरिश्ता लोगों को बटोरकर लाने वाले सबसे बड़े फरिश्ते से कहा, 'क्या मेरा भइया अंदर आ सकता है?'

'नहीं।' उसने कहा।

वह मुड़कर देखने लगी। बच्चा अपनी बाँहें पसारे चिल्ला रहा था, 'मैं यहाँ हूँ...मुझे भी ले चल मेरी बहना!' उसे लगा कि वह सिर्फ धरती से ही नहीं, आसमान और सितारों से भी जुड़ा हुआ है। आखिर उसकी बहन अब फरिश्ता बन गई थी।

इसके कुछ समय बाद उसके घर में एक बच्चे ने जन्म लिया और वह बड़ा भाई बन गया। लेकिन जल्द ही यह नया सदस्य भी अपना बिस्तर खाली छोड़कर चला गया।

-जारी

• शायरी...

खींच कर ले जाएगा अंजार महवर की तरफ
है बदन का रास्ता बाहर से अंदर की तरफ़
वो भी अपने सांस के सैलाब में है लापता
जो मुझे फैला गया मेरे ही मंज़र की तरफ़

◆◆◆

अब ख़लाओं को समेटे हर तरफ़ हों गामज़न
आज है मेरा सफ़र अपने ही पैकर की तरफ़
कोई तो पानी की वीरानी को समझेगा कभी
देखता रहता हूं अब मैं भी समुंदर की तरफ़

◆◆◆

ज़ेहन की क़ब्रों में फिर से सूर गूंजा है 'रियाज़'
तंगी-ए-इज़हार चल इक और महशर की तरफ़

-रियाज़ लतीफ़

◆◆◆

लुट चुका सारा असासा दिल का
जान ही अब तो बचा ले आऊं
रोज़ इस सोच में सूरज निकला
धूप से पहले घटा ले आऊं

-निश्तर ख़ानक़ाही

• कुछ इशारे...

कुछ इशारे वो सर-ए-बज़्म जो कर जाते हैं
नावक-ए-नाज़ कलेजे में उतर जाते हैं
अहल-ए-दिल राह-ए-अदम से भी गुज़र जाते हैं
नाम-लेवा तिरे बे-ख़ौफ़-ओ-ख़तर जाते हैं
सफ़र-ए-ज़ीस्त हुआ ख़त्म न सोचा लेकिन
हम को जाना है कहां और किधर जाते हैं
निगह-ए-लुत्फ़ में है उक़दा-कुशाई मुज़मर
काम बिगड़े हुए बंदों के संवर जाते हैं -शेर सिंह नाज़ 'देहलवी'